अक्रम यूथ

अक्तूबर २०१७ | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹२०

जगत् कल्याण

Dada's Youth Network

अनुक्रमणिका

४ श्रेष्ठ आत्म कल्याण या समाज कल्याण?

५ ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

६ ज्ञानी की जगत् कल्याण की भावना

८ संत पुरुष श्री जलाराम बापा

९ सत् पुरुष श्री रामकृष्ण परमहंस

१० ज्ञानी पुरुष पूज्य दादा भगवान

११ दादा भगवान परिवार : विज़न एवं सिद्धांत

१७ Q & A

१८ ज्ञानी विद यूथ

२० अनुभव

२२ दादाश्री के पुस्तक की एक झलक

You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store

Visit : http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth

Download free ebook / PDF versions of all Akram Youth issues by scanning this QR code

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : ५, अंक : ०६
अखंड क्रमांक : ५४
अक्तूबर २०१७

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
B-99, K6 Road, Electronics GIDC,
Sector 25, Gandhinagar - 382044,
Gujarat, India

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड

D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें

संपादकीय

प्रिय मित्रों,

आप सभी ने सुना ही होगा कि "हर एक काम की शुरुआत छोटे प्रयास से ही होती है" अथवा "हज़ारों मीलों का सफर पहले कदम से शुरू होता है"। आपको अचरज हो रहा होगा कि मैं क्यों लंबे सफर और बड़े काम की बातें कर रहा हूँ!

जगत् कल्याण - हाँ, आपने सही पढ़ा। परम पूज्य दादा भगवान की एक मात्र सांसारिक भावना, जिसके लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन समर्पित किया था। इस महीने के अंक में हम "जगत् कल्याण" इस टॉपिक पर बात करेंगे। दूसरे शब्दों में कहें तो, "इस जगत् के लोगों को सुख-शांति और शाश्वत आनंद की खोज करनी चाहिए"।

मुझे पता है आप सभी यही सोच रहे होंगे कि, "हम तो अभी छोटे हैं, यह सब जानने और समझने की हमें क्या ज़रूरत हैं? हम इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं? जो चीज़ हमारे लिए शक्य नहीं उसके बारे में क्यों सोचें?" एक मिनट, किसी भी निर्णय पर पहुँचने की जल्दबाज़ी मत करना, क्योंकि मुझे पक्का विश्वास है कि इस महीने का अंक पढ़ने के बाद आप सभी जीवन पर्यंत इसी सफर में जुड़ जाने का निश्चय करेंगे।

क्या आप जानते हैं कि दादा भगवान और नीरू माँ ने अपना पूरा जीवन जगत् कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था और अब हम देखते हैं कि पूज्यश्री दीपकभाई भी दादा भगवान की इस भावना को पूर्ण करने में सतत कार्यरत हैं। इस निःस्वार्थ कार्य करने का कारण यह है कि आज भी हम जब दादा या नीरू माँ को याद करते हैं तब हमारा हृदय आनंद से छलक जाता है। जब पूज्यश्री हमारे आसपास होते हैं, हमें परमानंद एवं शांति का अनुभव होता है। निःस्वार्थ भाव से हो रहे जगत् कल्याण का यह प्रभाव है।

तो चलो, दादा भगवान की जगत् कल्याण की इस भावना के बारे में समझे और जाने एवं उनके इस सफर में जुड़ जाएँ। चाहे एक छोटा कदम ही उठाएँ लेकिन यह तो तय है कि शाश्वत आनंद का अनुभव ज़रूर होगा।

-डिम्पल मेहता

श्रेष्ठ आत्म कल्याण
या समाज कल्याण?

राहुल स्कूल बस से उतरकर दौड़ता-दौड़ता घर के दरवाज़े पर पहुँचकर बार-बार डोर बैल बजाने लगा। अंदर से दरवाज़ा खोलकर माँ ने कहा, "राहुल, इतनी भी क्या जल्दी है?", "सॉरी मम्मी", उनके गाल खींचते हुए राहुल बोला।

राहुल जल्दी से कपड़े बदलकर सोफे पर दादा जी के पास आकर बैठ गया। दादा जी ने अखबार मोड़ते हुए कहा, "अरे वाह! राहुल बेटा, आज तो तुम बहुत खुश नज़र आ रहे हो!" राहुल उत्साह से बोला, "हाँ, दादा जी। आज मैं बहुत खुश हूँ।"

"आखिर किस बात की इतनी खुशी है?", माँ ने किचन में से ही पूछा।

"मम्मी, आज हम स्कूल के "शेयर एन्ड जॉय" प्रॉजेक्ट के लिए गीता मैम के साथ बाहर गए थे।" राहुल ने उत्साह से कहा।

दादा जी ने उत्सुकता से पूछा, "शेयर एन्ड जॉय

प्रॉजेक्ट!"

राहुल ने उन्हें समझाते हुए कहा, "हाँ, शेयर एन्ड जॉय प्रॉजेक्ट में हम लेबर कॉलोनी में जाकर अपनी जो पुरानी और अनुपयोगी चीज़ें होती हैं, वे सब वहाँ रहने वाले लोगों को देते हैं और इसी प्रॉजेक्ट के लिए आज हम लेबर कॉलोनी में चीज़ें देने गए थे।

सच कहूँ दादा जी! आज मुझे बहुत खुशी हो रही है, अद्भुत आनंद हो रहा है।" राहुल ने अपना भाव व्यक्त करते हुए कहा।

दादा जी ने राहुल के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा, "हाँ बेटा, दूसरों की मदद करना, समाज कल्याण के हेतु से जीवन बिताना, यह तो बहुत उत्तम बात है।

इतने में मम्मी डाइनिंग टेबल पर खाना रखते हुए बोलीं, "चलो, खाना खाने बैठ जाओ। खाना तैयार है।"

"हाँ, मम्मी" राहुल ने कहा।

"चलो बेटा, आज इसी बात पर खाना खाने के बाद हम आइस्क्रीम खाने जाएँगे।"

"याहू..." करते हुए राहुल दादा जी के साथ डाइनिंग टेबल पर आ गया।

दूसरे दिन जब राहुल स्कूल से बाहर निकलकर स्कूल बस में चढ़ रहा था तब उसने देखा कि, लेबर कॉलोनी के जिन बच्चों को कपड़े, खिलौने, पढ़ाई के लिए जो चीज़ें दी थी आज वही बच्चे सिग्नल पर भीख माँग रहे थे।

यह देखकर राहुल भावुक हो गया और उसे ढ़ेर सारे प्रश्नों ने घेर लिया। इन लोगों की हमने जो मदद की, क्या उससे इन लोगों के जीवन में शांति या सुख नहीं ला सके? इन लोगों को जो मदद की क्या वह पर्याप्त नहीं थी? क्या समाज कल्याण से भी ऊँची कोई और चीज़ हो सकती है?

तो चलो, देखते हैं इस पर दादाश्री क्या कहते हैं...

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से

प्रश्नकर्ता : समाज कल्याण करने के बजाय आत्म कल्याण ही श्रेष्ठ है। तो फिर हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ठीक है, लेकिन जब तक आत्म कल्याण नहीं होता, तब तक समाज कल्याण करते रहना। आत्म कल्याण तो कठिन है। आत्म कल्याण तो कभी हो ही नहीं सकता। चाहे अनंत अवतार भटके, हिमालय में भटके, कहीं भी भटके लेकिन किसी भी जगह पर आत्म कल्याण नहीं है। वह सब बाहर का ही है। ये सभी बड़े-बड़े भी भटक गए हैं न! ये इतनी खोज करते हैं कि, "मैं आत्मा हूँ", ऐसा जानते हैं, फिर भी नहीं हो पाता न! नहीं हो पाती यह चीज़। यह कोई आसान नहीं है। वह तो जब कभी अक्रम मार्ग के ज्ञानीपुरुष हों, जिनके अहंकार और बुद्धि सब खत्म हो चुके हों, वहाँ पर आत्म कल्याण हो सकता है। जबकि क्रमिक मार्ग में हज़ारों सालों में ज्ञानी होते हैं लेकिन वे खुद दूसरों को प्रकाश देते हैं और फिर खुद आगे के लिए प्रकाश माँगते हैं। अर्थात् उन्हें खुद को आगे के प्रकाश की ज़रूरत पड़ती है।

ज्ञानी की जगत् कल्याण की भावना

दादाश्री

परम पूज्य दादाश्री कई अवतारों से एक ही भावना करते आए कि जगत् का कल्याण हो और इस भव में कल्याण की भावना तो रखनी ही चाहिए न! इसमें हमारा ही कल्याण है। लोगों के कल्याण की भावना करेंगे तो उसी में हमारा भी कल्याण है। सामने वाले को किस तरह मुझ से लाभ हो और वह ज्ञान पाए, ऐसी मेहनत करते हैं न, तो हम खुद अपना ही कल्याण करते हैं। वे इसी ध्येय के लिए अपना जीवन जी रहे थे। जगत् कल्याण का जिसका प्रण नहीं, वे ज्ञानी ही नहीं।

नीरू माँ

जगत् कल्याण के लिए कोई क्रिया नहीं करनी है। बस, एक मात्र भावना ही करनी है। यह भावना इतनी अधिक प्योर होनी चाहिए कि जिसमें किसी भी तरह के मान, लालच और कषाय की भीख न हो। तब कुदरत ही उन्हें जगत् कल्याण का निमित्त बनाती हैं। वे श्रद्धा की प्रतिमा होते हैं। जिन्हें देखते ही लोगों में भाव परिवर्तन होने लगता है।

पूज्यश्री

जिनका स्वयं का कल्याण हो गया हो वही दूसरों का कल्याण कर सकते हैं। स्व कल्याण होने के बाद ही जगत् कल्याण की प्योर भावना अंदर शुरू होती है और खुद के कल्याण की शुरुआत तो यह ज्ञान मिलने से, आज्ञा का पालन करने से हो जाती है। जब क्लेश-कषाय-विषय खत्म हों तब कल्याण स्वरूप बनने की शुरुआत होती है।

जगत् कल्याण के निमित्त

संत पुरुष | सत् पुरुष | ज्ञानी पुरुष

श्री जलाराम बापा

श्री जलाराम बापा का जन्म १४ नवम्बर १७९९ को गुजरात राज्य के राजकोट शहर के निकट वीरपुर नामक गाँव में हुआ था। माता राजबाई से उन्हें विनय, धैर्य, बलिदान, कर्तव्य और दया जैसे गुण विरासत में मिले थे। वीरपुर पवित्र तीर्थ स्थल, गीरनार की ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित होने की वजह से आमतौर पर सभी यात्री और साधु वहाँ आराम करते। खाते-पीते और आराम करते, फिर आगे बढ़ते। कई साधुगण गाँव में जाकर भिक्षा माँगकर स्वयं भोजन पकाते और खाते।

संयोगवश एक दिन वालजी भाई की दुकान को छोड़कर गाँव की सभी दुकाने बंद थीं। क्योंकि चाचा वालजी भाई की दुकान का व्यापार जलाराम बापा संभालते थे। इसलिए उस वक्त वे दुकान पर ही बैठे थे। दूसरी दुकाने बंद होने की वजह से सभी साधु-पंडित-तपस्वी और भिक्षुक वालजी भाई की दुकान पर आने लगे। एक साथ इतने सारे साधुओं को देखकर बापा गद्‌गद् हो गए और सभी को ज़रूरी माल-सामान जैसे कि दाल-चावल-घी-गुड़-आटा आदि देने लगे। कुछ साधु, जिनके वस्त्र फटी हुई हालत में थे उन्हें वस्त्र दिए। जिसने जो माँगा बापा ने दिया। भविष्य में मेरा क्या होगा ऐसा विचार तक उन्होंने नहीं किया। ज़रूरतमंद की मदद करना उनका एक मात्र उद्धेश्य था।

चाचा कभी भी बापा के सद्‌गुणों की प्रशंसा करते नहीं थकते थे और यही गाँव के कुछ लोगों के लिए ईर्ष्या का कारण बना। इन्हीं लोगों ने बापा द्वारा किए गए दान को लेकर वालजी भाई के कान भरे। गुस्से में आकर चाचा छानबीन करने दुकान जा पहुँचे और बापा को धमकाते हुए दुकान के माल का हिसाब माँगा। चाचा के क्रोध से बचने के लिए जलाराम बापा ने प्रभु से प्रार्थना की। यह सन् १८१७ की बात है। तभी एक चमत्कार हुआ। जैसे ही चाचा ने माल की जाँच की तो पता चला कि सारा माल सही सलामत था। कुछ भी कम नहीं हुआ था। कपड़ा भी कम नहीं हुआ था। यह देखकर चाचा आश्चर्यचकित हो गए और उन्होंने जलाराम बापा को सादर नमस्कार किया।

ऐसा चमत्कार कैसे संभव हुआ होगा? शायद इसलिए कि बापा हरेक कार्य करते वक्त मन में "ईश्वरार्पणम्" बोलकर वह कार्य ईश्वर को अर्पण करते थे। इस घटना के पश्चात बापा ने अनुभव किया कि परम कृपालु परमात्मा उनकी रक्षा कर रहे हैं और उनके प्रत्येक सत्कार्य में परमात्मा का आशीर्वाद है। इस अनुभव के बाद बापा की संसार त्याग, प्रभु साक्षात्कार और सेवा-परोपकार की भावना और भी अधिक प्रबल हो गई।

श्री रामकृष्ण परमहंस

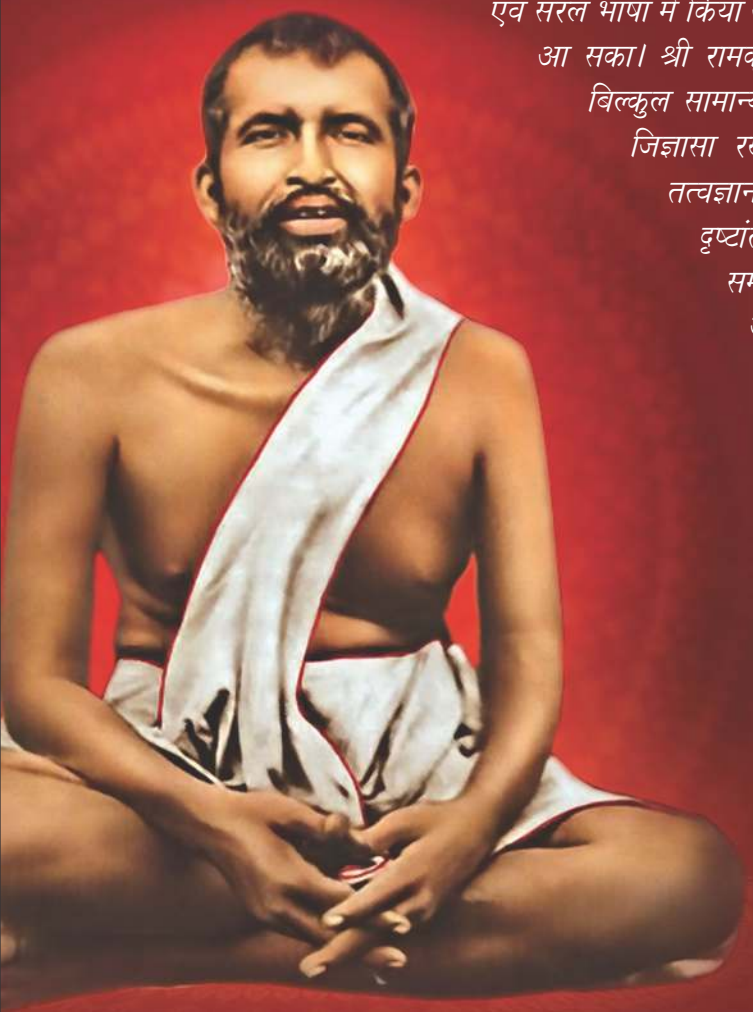

श्री रामकृष्ण परमहंस १९वीं सदी के सुप्रसिद्ध धर्मगुरु एवं योगी थे। सन् १८३६ में पश्चिम बंगाल के एक गाँव में उनका जन्म हुआ। उन्होंने धर्म और अध्यात्म के गहन एवं जटिल सिद्धांतों का वर्णन ऐसी सादी एवं सरल भाषा में किया जो कि आसानी से जनसाधारण की समझ में आ सका। श्री रामकृष्ण हमेशा प्रभु की भक्ति में लीन रहते। बिल्कुल सामान्य व्यक्ति जैसे दिखने वाले और बाल-सहज जिज्ञासा रखने वाले रामकृष्ण परमहंस आध्यात्मिक तत्वज्ञान की गहरी और कठिन बातें, सरल कहानियाँ, दृष्टांत और कहावतों के माध्यम से इस तरह समझाते कि सीधे अंदर उतर जाती। उन्होंने पूरा जीवन भगवान की खोज और विविध रूप से भजने में बिताया। उनमें यह दृढ़ श्रद्धा थी कि परमात्मा हरेक जीवमात्र में विराजमान हैं।

उनके श्री विवेकानंद जैसे शिष्य, जो दीक्षा लेकर संसार का त्याग करने वाले एवं रामकृष्ण मठ की स्थापना करने और उनकी प्रतिष्ठा हिन्दुस्तान में ही नहीं लेकिन विश्वभर में फैलाने में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले थे। उन्होंने रामकृष्ण परमहंस की तरह ही लोक सेवा करने का प्रण लिया था।

परमहंस के हृदय में एक ही भाव रहता कि, मनुष्य जीवन का अंतिम ध्येय यानी मोक्ष प्राप्त करने की साधना में ही सतत् प्रयत्नशील रहें। वे कहते थे, "हरेक जीव का अंतिम ध्येय प्रभु का साक्षात्कार करना होना चाहिए।"

पूज्य दादा भगवान

एकबार दादा को सूरत के किसी गाँव में पधारने का निमंत्रण मिला। उन दिनों गाड़ियों में ए.सी. नहीं होता था। रास्तों पर धूल, मिट्टी खूब उड़ती थी। दादा को अस्थमा का प्रॉब्लेम था। इसलिए फेफड़ों में धूल घुस जाने की वजह से खाँसी आ रही थी और वे ठीक तरह से साँस भी नहीं ले पा रहे थे। इस वजह से उनका पूरा शरीर नीला पड़ने लगा। उसी दिन सूरत में सत्संग था और दूसरे दिन ज्ञानविधि थी। उनकी तबियत बिगड़ती देखकर नीरू माँ ने दादा से कहा, "सत्संग रद्द कर देते हैं, इस हालत में कैसे हो पाएगा!" तब दादा ने अत्यंत करुणा से कहा, "कहाँ-कहाँ से लोग आए हैं। फिर कब संयोग प्राप्त होगा! बेचारों को ज्ञान ले लेने दो न। इस शरीर को कुछ नहीं होगा! कितने ही अंतराय टूटे हैं तब जाकर ये लोग यहाँ ज्ञान लेने आए हैं। सागर में से एक चीज़ मिली हो तो वापस दोबारा कब मिले उसका भरोसा नहीं। यदि हमने मना किया तो वे चूक जाएँगे और फिर कब मिलेंगे उसका क्या भरोसा!" साँस लेने में भी तकलीफ हो रही थी ऐसी हालत में भी दादा ने ज्ञानविधि दी। उनकी यह अद्भुत विशेषता थी कि वे देह से बिल्कुल अलग ही थे। जब ज्ञानविधि शुरू हुई तब शरीर नॉर्मल था और पूरी होते ही उनकी बिमारी मानो लौट आई। बीच के दो-ढ़ाई घंटे नॉर्मल स्थिति रही। वे जो निश्चय एक बार कर लेते थे उसे फिर कभी नहीं बदलते थे। उनकी जगत् कल्याण की भावना इतनी अधिक प्रबल थी कि शरीर को चाहे जो भी हो वे अपने ध्येय के अनुसार ही चलते थे।

अहो! ज्ञानी की कितनी अद्भुत कल्याण की भावना कि इसके सिवाय अन्य किसी चीज़ की कीमत ही नहीं।

दादा भगवान परिवार : विज़न एवं सिद्धांत

दादाई विज़न

"जगत् को परम शांति प्राप्त हो, और कितने ही लोगों को मोक्ष प्राप्ति हो।"

- दादा भगवान

कलियुग का सूरज मध्याह्न में तप रहा है। पूरा जगत् भ्रष्टाचार, दुराचार, कुसंग रूपी दावानल में जल रहा है, ऐसे दूषम काल में जगत् को इसमें से निकालने के लिए सृजन हुआ, ग्यारहवाँ आश्चर्य और ए.एम.पटेल के भीतर प्रकट हुए "दादा भगवान"। जिनकी एकमात्र भावना, "जो सुख मैंने प्राप्त किया वही पूरा जगत् प्राप्त करें।" वही भावना रूपी बीज आज वटवृक्ष बनकर जगत् को शांति प्रदान करने के लिए कार्य कर रहा है। यह वटवृक्ष यानी "दादा भगवान फाउन्डेशन"। जिनका एक ही ध्येय "जगत् को परम शांति प्राप्त हो, और कितने ही लोगों को मोक्ष प्राप्ति हों।" इस ध्येय और जगत् कल्याण की भावना से यहाँ अनेक सेवार्थी कार्य कर रहे हैं।

प्योरिटी

दादा के साथ नीरू माँ को सत्संग प्रवास पर जाना होता। दादा ने नीरू माँ को पैसों की प्योरिटी के लिए चौकन्ना किया था। और हमेशा नीरू माँ डोनेशन का पैसा खुद के काम में इस्तेमाल ना हो उसका खास ध्यान रखते। नीरू माँ हमेशा खुद के पैसों से ही सत्संग यात्रा करते। उन्होंने कभी भी डोनेशन का उपयोग खुद के लिए नहीं किया था। अडालज में मंदिर बनने के पश्चात नीरू माँ की भावना थी कि सभी महात्मा एक साथ वहाँ रहे। शुरू में सभी एक बंगले में ही रहते थे। बाद में नीरू माँ वात्सल्य में पूज्यश्री और एक आप्तपुत्र भाई के साथ रहते थे। एक दिन अचानक उन्होंने उन आप्तपुत्र भाई को बुलाया और "वात्सल्य" के निर्माण में हुए खर्च में खुद का हिस्सा दिया। इसके बाद मुँबई सत्संग दौरान उन्होंने नीरू माँ से प्रश्न पूछा कि, "आपको भौतिक चीज़ों के लिए कैसा रहता है?" तब नीरू माँ ने कहा कि, "मुझे हमेशा अंदर ऐसा ही रहता है कि इस भरतक्षेत्र की कोई भी विनाशी चीज़ मुझे नहीं चाहिए।"

कषाय रहित आदर्श व्यवहार

खुद की ही गरज़ से जिन्हें सिर्फ मोक्ष में जाना है ऐसा आदर्श उदाहरण यदि किताब में देखना है तो श्रीमद् राजचंद्र को देखें और यदि प्रत्यक्ष में देखना है तो दीपकभाई को देखें। खुद की ही गरज़ से। कहीं भी ज़रा सी भी खोट खाए बिना, ज़रा सी भी विशेषता में आए बिना। चाहे कहीं भी हो खुद के भीतर ही उनकी दृष्टि होती है। खुद के भीतर ही देखते हैं कि कहाँ भूल हो रही है! उसी पर उनकी दृष्टि रहती है। बाहर कहीं भी उनकी दृष्टि नहीं होती। पूरा जगत् यथार्थ रूप से उन्हें निर्दोष दिखाई देता है।

- नीरू माँ

विज़न स्टेटमेन्ट : १-१-२०१३

"जगत् को परम शांति प्राप्त हो, और कितने ही लोगों को मोक्ष प्राप्ति हो।"

- दादा भगवान

अधीनता प्रत्यक्ष ज्ञानी की

पूज्यश्री एवं नीरू माँ द्वारा दादावाणी को संकलित करके आप्तवाणी बनाने का काम चल रहा था। इस दौरान एक दिन नीरू माँ बड़ौदा जाने वाले थे। पूज्यश्री वात्सल्य में वाणी का काम कर रहे थे। तब नीरू माँ ने पूज्यश्री से कहा कि, "दीपक तू क्या कर रहा है? मेरे साथ बड़ौदा चल।" पूज्यश्री ने तुरंत ही बड़ौदा जाने के लिए तैयारी की और गाड़ी में जाकर बैठ गए। इतने में नीरू माँ को वाणी का कुछ अर्जन्ट काम याद आया। उन्होंने तुरंत ही पूज्यश्री से कहा, "यह काम कौन करेगा? तू यहीं पर रहकर काम निपटा।" पूज्यश्री तुरंत ही गाड़ी में से उतर गए और वाणी के काम में लग गए। अहो! कैसी अधीनता ज्ञानी की! एक शब्द भी कहे बिना और परम विनय चूके बिना, ज्ञानी की आज्ञा वही धर्म!

अकर्ता पद

दादाजी के देहविलय के बाद नीरू माँ को जगत् कल्याण की भावना खूब रहती थी। इसलिए नीरू माँ अकेले ही सत्संग करने निकल पड़ते। लोगों को दादा की पहचान किस तरह हो इस हेतु से वे गाँव-गाँव घूमते। नीरू माँ को हमेशा यही रहता कि ऐसे अद्भुत ज्ञानी हुए जिन्हें जगत् में बहुत कम लोग पहचान पाए। तो किस तरह लोग ऐसे ज्ञानी को पहचानें और क्या करें कि सभी ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ें, यही भावना रहती। दादा की हर एक भावना उन्होंने पूरी की। त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी, निरांत, गुरुकुल, बैंक। इस तरह सारा दादाई डिज़ाइन पूर्ण किया। नीरू माँ ने दादा को चौदह आप्तवाणियाँ प्रकाशित करने का प्रॉमिस दिया था। जो उन्होंने निरंतर चालू रखा। इस तरह उन्होंने जगत् कल्याण के कई कार्य किए। इसके बावजूद, "यह सब काम दादाजी की कृपा, उनके योगबल से हो रहा है, देव-देवियों की सहायता से और व्यवस्थित के अधीन हो रहे हैं", ऐसा नीरू माँ बोलते। उन्होंने कभी भी श्रेय नहीं लिया। कभी भी कर्ता पद में नहीं आए।

मूल्य
प्योरिटी - कषाय रहित व्यवहार
अकर्ताभाव - अधीनता प्रत्यक्ष ज्ञानी की

त्रिमंदिर

हमें देरासर (मंदिर) अनिवार्य तौर पर बनवाने पड़े। लोग दर्शन करके जाएँ, इससे इन लोगों में जो मतार्थ हैं वे सब निकल जाएँगे। यह मतार्थ निकालने के लिए है। लोग आत्मार्थ के बदले मतार्थ में पड़ गए हैं। उनका मतार्थ निकल जाए तो वे आत्मार्थ में आ जाएँ।

- दादाश्री

सीमंधर सिटी

देखना, उस कॉलोनी में छपरे वाले मकान होंगे और लोगों को पसंद आएँ, ऐसे। क्योंकि विभिन्न देशों से लोग यहाँ आने वाले हैं, देखने के लिए कि कॉलोनी कैसी है? इतनी बढ़िया और साफ-सुथरी बनानी है कि मानो मिनी अमरीका है, ऐसा लगे।

- दादाश्री

ज्ञानी पुरुष की वाणी

आप्तवाणी

इस काल में यह सब से बड़ा आश्चर्य है! अमरीका में तो लोग आफरीन हो गए हैं ये आप्तवाणी पढ़कर। जगत् के लिए बहुत ही कल्याणकारी है न! जगत् के लिए हितकारी है न! पूरे जगत् का रोग मिटा दे, ऐसी वाणी है यह। निरंतर, सुबह दातुन करते वक्त भी यह टेप चलती रहती है। बोला गया एक शब्द भी ये लोग छोड़ते नहीं है और फिर उसकी पुस्तकें छपवाते हैं। इसे पढ़ें तो कल्याण हो जाए। इस वाणी को पढ़ते ही दिल में ठंडक हो जाती है।

-दादाश्री

स्कूल और कॉलेज

हमें अक्रम विज्ञान के कोर्स का कॉलेज शुरू करना है। वहाँ बारह महीने में संपूर्ण कोर्स खत्म हो जाएगा। साथ ही आप्तसूत्र के लिए बीच में १ घंटा निकले। हमने जो प्राप्त किया वह सभी प्राप्त करें। हमारी यह भावना, अभी जो एक-दो अवतार निकालने हैं उसमें हेल्प करेगी। यह भाव हेल्पिंग है न?

-दादाश्री

ज्ञानियों की वंशावली

हम हमारे पीछे ज्ञानियों की वंशावली छोड़ जाएँगे। हम अपने वारिस छोड़ जाएँगे! और उसके बाद भी ज्ञानियों की लिंक चालू रहेगी। अतः जीवंत मूर्ति ढूँढना, इसके बिना निपटारा आए ऐसा नहीं है।

-दादाश्री

जगत् कल्याण की सेना

ये ब्रह्मचारी तैयार हो रहे हैं और ये ब्रह्मचारीणियाँ भी तैयार हो रही हैं। उनके चेहरे से नूर टपकेगा। अरे! सिंह की संतान बैठी हो, ऐसा लगे। तब पता चले कि नहीं, कुछ तो है! वितराग विज्ञान कैसा है कि यदि पच गया तो सिंह का दूध पचाने बराबर है। तो सिंह की संतान जैसा वह लगे, नहीं तो बकरी जैसा दिखाई दे!

जिसने जगत् कल्याण का निमित्त बनने का बीड़ा उठाया है उसे जगत् में कौन रोक सकता है? ऐसी कोई शक्ति नहीं जो उसे रोक सके। पूरे ब्रह्मांड के सर्व देवगण उन पर फूल बरसा रहे हैं। अतः यह ध्येय तय करो न! जब से यह तय किया तभी से इस शरीर की ज़रूरतों के लिए चिंता करने की आवश्यकता नहीं रहती।

-दादाश्री

प्रश्नकर्ता : *जगत् कल्याण करने से कौन से फायदे होते हैं? सेवा किस तरह से व्यवहार में हेल्प करती है?*

आप्तपुत्र : *हम जब सेवा कर रहे होते हैं न तब दूसरे सेवार्थियों और सेवा के विभिन्न विभागों के संपर्क में आते हैं। कई बार एक-दूसरे को अनुकूल होकर निर्णय लेना होता है। निर्णय लेते वक्त कई बातें ध्यान में रखनी पड़ती हैं। जिससे हमारी सूझ खिलती है और विज़न भी विकसित होता है। घर या ऑफिस में या हमारे व्यवसाय में हमें अनुकूल वातावरण मिलता है। जबकि सेवा में तो सर्दी, गर्मी, बरसात सभी संयोगों को ख्याल में रखना होता है। उदाहरण के तौर पर सर्दी या गर्मी के मौसम में खुली जगह पर सत्संग का आयोजन कर सकते हैं। जबकि बारिश में हॉल में सत्संग करना पड़ता है। सेवा में कितनी ही बातें ध्यान में रखनी पड़ती है। इससे विज़न भी विकसित होता है।*

सेवा में विभिन्न प्रकृति वाले लोगों के साथ व्यवहार में आते हैं। जिससे हर एक प्रकृति को अनुकूल होने से हमारी शक्तियाँ बढ़ती हैं। जो हमें व्यवहार में हर जगह पर उपयोगी होती हैं। इस तरह से सेवा में हमारी सूझ और विज़न खिलते हैं और हर एक संयोग अथवा व्यक्ति को अनुकूल होने की हमारी शक्ति बढ़ती है। व्यवहार में हम फ्लेक्सिबल बनते हैं। और इसके फल स्वरूप हम कषाय रहित व्यवहार कर सकते हैं। जबकि दूसरी छोटी-छोटी बातों में उलझ जाते हैं और कषाय करते हैं।

इस तरह हमारा व्यवहार कषाय रहित होता जाता है। नौकरी या व्यापार में हमारी सूझ खिलती है। दूसरों के साथ एडजस्ट होकर अच्छा व्यवहार कर सकते हैं।

ज्ञानी विद यूथ

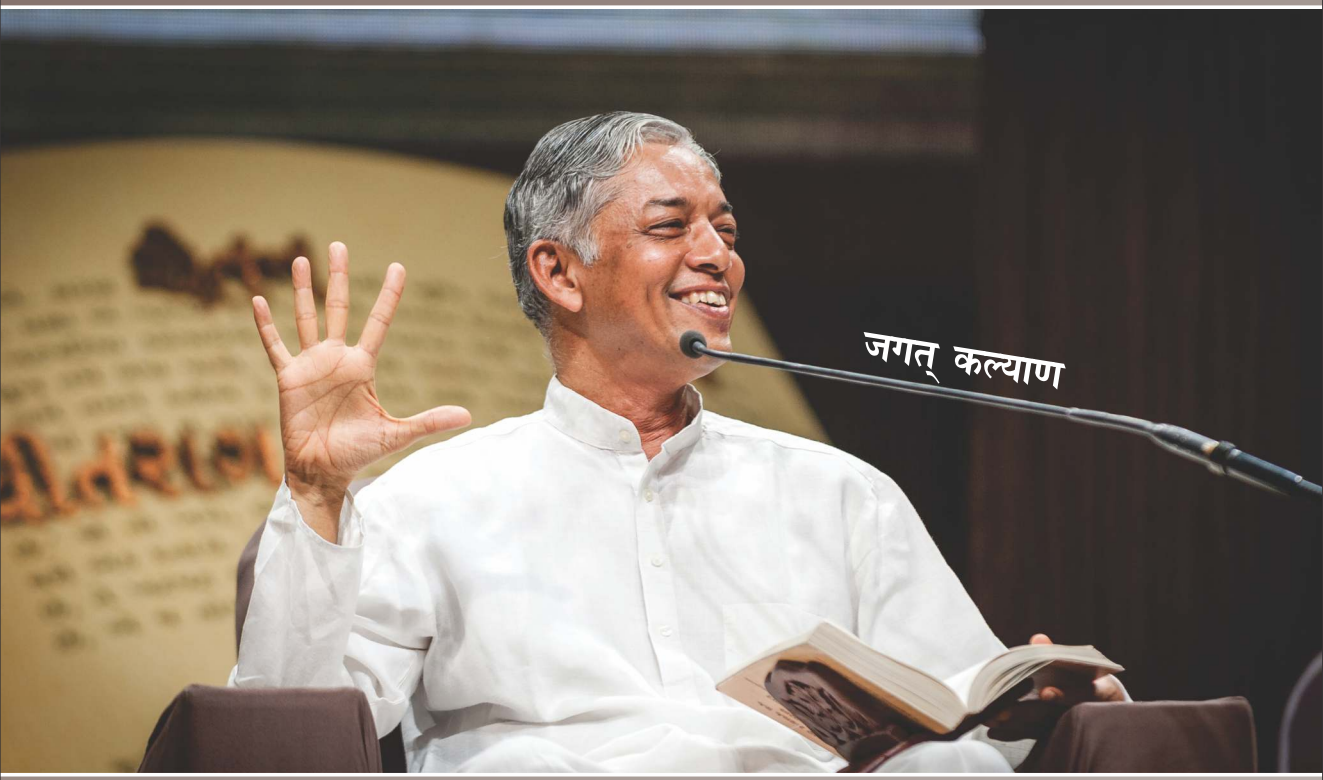

प्रश्नकर्ता : एक बार दादा की वाणी में सुना था कि जगत् कल्याण कब संभव है, जब स्वयं कल्याण स्वरूप बन जाए तब अथवा खुद का कल्याण हुआ हो तब और दूसरी ओर ऐसा भी सुना है कि, दूसरों का कल्याण करते-करते खुद का कल्याण भी हो ही जाता है। तो यह समझाएँ।

पूज्यश्री : ये दोनों ही बातें सच है। पहला तो "मैं शुद्धात्मा हूँ" ऐसा भान होता है। चंदू भाई जुदा है "मैं शुद्धात्मा हूँ"। पाँच आज्ञा में रहने से हमारा कल्याण हो जाता है। और जो खुद मुक्त हो गया हो उसे ऐसी भावना शुरू होती है कि दूसरें भी मुक्त हों। हमारे मन-वचन-काया दादा के जगत् कल्याण के कार्य में उपयोग करें। औरों के सुख के लिए समर्पित करें तो फिर हमारे कल्याण की शुरुआत हुई कहलाएगी और पूर्णाहूति भी होगी। हमारा १०० % कल्याण होने के बाद लोगों के कल्याण की शुरुआत करेंगे ऐसा नहीं होगा। नियम ही है कि थोड़ी शुरुआत हुई। यानी आप मन-वचन-काया से जुदा हो गए हो तो मन-वचन-काया लोगों के कल्याण के लिए समर्पित करें। दादा के जगत् कल्याण के प्रॉजेक्ट में कहीं भी सेवा दें। यह सेवा देते-देते उसका एन्ड रिज़ल्ट लोगों को सुख-शांति होगी। मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ने का रास्ता मिलेगा और लोगों का कल्याण करते-करते हमारी भी पूर्णाहूति होगी। हमें कषाय रहित सेवा करनी चाहिए। कषाय खाली करना वही मोक्षमार्ग। पाँच इन्द्रियों के सुख में से निकलकर, राग-द्वेष-क्रोध-मान-माया-लोभ-अहंकार-ममता-कषाय में से निकलकर आत्मा की ओर जाना वही मोक्ष मार्ग है। लोगों का

कल्याण करते-करते हमारा कल्याण अवश्य होगा।

प्रश्नकर्ता : जगत् कल्याण करना रिलेटिव है। तो वह रियल के लिए कितना फायदेमंद है?

पूज्यश्री : यह रिलेटिव कैसा है कि रियल की ओर ले जाने वाला रिलेटिव है। रियल रिलेटिव कहलाता है। इसका हेतु क्या है, आत्मा के आवरण टूटेंगे और सामने वाले के आत्मा के कल्याण के लिए हैं। इसलिए यह रियल रिलेटिव कहलाता है। इसका हेतु क्या है, रियल की ओर जाने से ही मनुष्य मात्र के दुःखों का अंत आएगा। दूसरों को सुख देने के लिए दुःख देना बंद करते हो तो वह बहुत बड़ा कल्याण का काम शुरू हुआ, कहेंगे। सब से बड़ी बात तो नीरू माँ ने अल्टीमेट की अपेक्षा से कहा है कि "चाहे जितना भी कल्याण का काम कर रहे हों और यदि मोक्ष का विमान आए न तो मेरी साइन मोक्ष के लिए ही होगी।" यह जगत् कल्याण का काम तो फिर दूसरा कोई करेगा। लेकिन दूसरी ओर अंतिम साँस तक कल्याण का काम किया। अंत में डॉक्टर को भी ज्ञान दिया। यह तो देह का हिसाब पूरा हो तब तक देह में रहना ही पड़ता है। लेकिन देह को जो भी सुख-दुःख आए उसमें वे कहीं थे ही नहीं। देह की हाज़िरी में खुद सामने वाले का कल्याण ही किया है, यानी यह करने जैसा है। अंतिम साँस तक कल्याण के काम करने से कोई रोक नहीं पाया।

अनुभव

दिसम्बर २००२ की यह बात है। २००२ में अडालज त्रिमंदिर का निर्माण कार्य तेज़ी से चल रहा था। इसका खातमुहूर्त १ जनवरी २००० के दिन हुआ था। इस अति भव्य मंदिर में नीचे ३०,००० स्क्वेर फुट का विशाल हॉल और ऊपर विशाल पोडियम बनाना था। विशाल हॉल के बीच में एक भी पिल्लर न था। लेकिन जनवरी २००१ में आए भूकंप के कारण डिज़ाइन बदलना पड़ा। भूकंप जैसी आपदा में भी सलामती रहे इस हेतु से हॉल में २ पिल्लर रखवाए। जिसकी वजह से मंदिर पूरा होने में विलंब हुआ।

एक ओर मंदिर के प्रतिष्ठा महोत्सव में संमिलित होने विदेशों से काफी सारे महात्मा आने वाले थे। इन महात्माओं को दिसम्बर एन्ड में क्रिस्मस वेकेशन होती हैं। ऐसे सभी संयोगों को ध्यान में रखते हुए प्राणप्रतिष्ठा का दिन २७ दिसम्बर २००२ तय हुआ। और बहुत पहले से ही इसकी घोषणा भी कर दी गई थी ताकि सब को महोत्सव में आने के लिए प्लानिंग करने में सुविधा रहे।

दूसरी ओर जाड़े का मौसम और कंपाने वाली तेज़ हवा के कारण काम मंद पड़ गया था। और मंदिर के शिखर का काफी काम बाकी रह गया था। नवम्बर महीने में दिवाली होने से पर्याप्त मात्रा में मज़दूर भी नहीं मिलते। दिसम्बर में प्राणप्रतिष्ठा होना तय था और इसमें कोई भी बदलाव संभव नहीं था क्योंकि फॉरेन के महात्माओं ने अपनी छुट्टियों की प्लानिंग कर ली थी। अतः दिसम्बर में प्रतिष्ठा से पहले शिखर का कार्य पूर्ण करना भी आवश्यक था। इस काम के लिए लगभग ३ महीने लग जाएँ, ऐसा था।

नीरू माँ को इस बात का पता चला। उन्होंने बहुत ही पॉज़िटिविटी के साथ कहा, "मज़दूरों को रात में भी बुलाओ। उन्हें रात की ठंड में गरम नाश्ते के साथ चाय पिलाओ।" इस प्रकार रात में गरम नाश्ता और चाय की सेवा शुरू करने के फल स्वरूप मज़दूरों की संख्या भी बढ़ गई। और पूज्य दादा एवं देव-देवियों के आशिर्वाद से जो कार्य लोगों को असंभव लग रहा था वह संभव हुआ। शिखर का काम समय पर पूर्ण हुआ। एवं प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव भी निर्धारित समय पर दिव्य एवं भव्य रूप से मनाया गया।

- कन्स्ट्रक्शन टीम

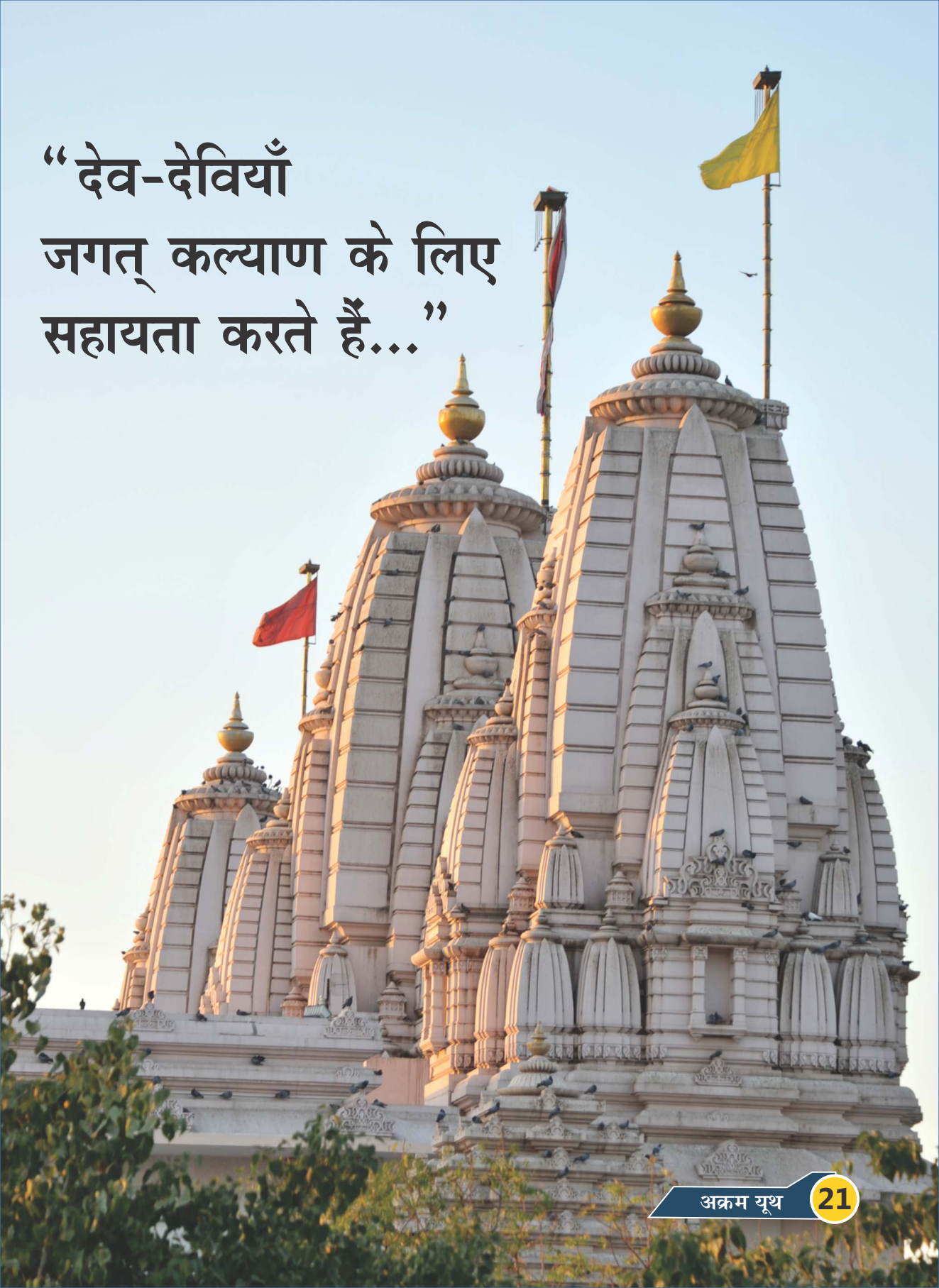

"देव-देवियाँ जगत् कल्याण के लिए सहायता करते हैं..."

दादाश्री के पुस्तक की एक झलक

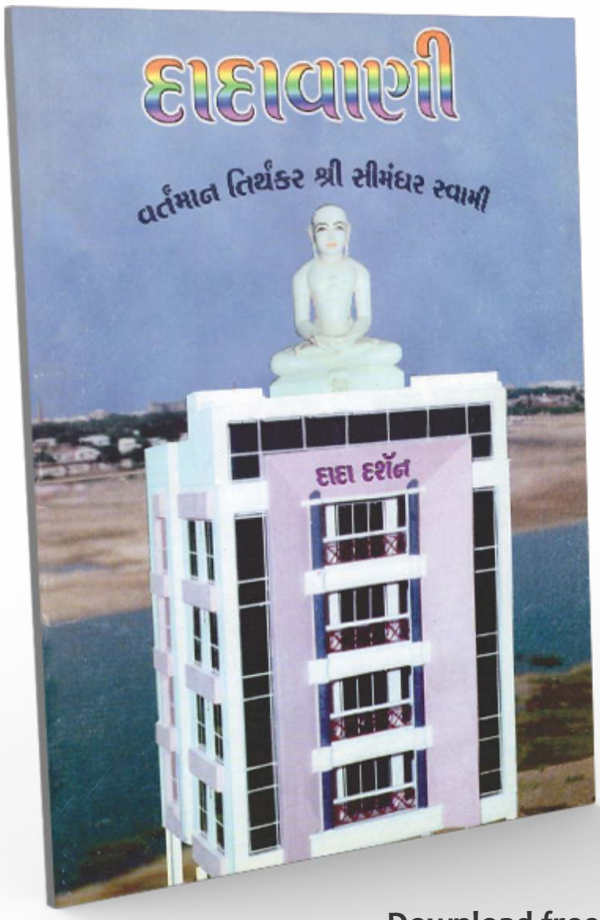

दिसम्बर
१९९९

Download free ebook version of
above book by scanning this QR code
Visit : https://goo.gl/rhn9Dw

जगत् का कल्याण तो होना ही चाहिए!

यह विज्ञान यदि लोगों तक पहुँचें न, तो सब को इस पर राग हो जाएगा। पब्लिक तो बेचारी जहाँ ले जाओ वहाँ जाए ऐसी है। उसे सही-गलत की परख ही नहीं है। उनके लिए तो पैसे की ही कीमत है। इसलिए एक बार सब समझ लो कि यह क्या हकीकत है। वास्तविकता क्या है!

प्रश्नकर्ता : यह सब जानना है।

दादाश्री : लेकिन इसके लिए टाइम निकालना पड़ेगा। हाँ, और यह तो जब आप बार-बार आओगे न तब यह सब जान सकोगे। यह वर्ल्ड के कल्याण के लिए प्रकट हुआ निमित्त है। २७ साल से अविरत काम कर रहा हूँ। तो रोज़ कितने घंटों का काम होगा मेरा? १६ घंटे भी, वह भी एक भी छुट्टी के बिना। छुट्टी ही नहीं मिलती। ६:३० बजे सर्विस शुरू हो जाती है तो रात के ११:३० बजे बंद होती है। बीच में २-३ घंटे आराम मिलता है। अब बोलो, इस जगत् का आवरण हटना ही चाहिए, जाना ही चाहिए।

"हमारी" यही भावना है कि चाहे १ अवतार की देरी हो तो हर्ज़ नहीं। लेकिन यह विज्ञान फैलना चाहिए। लोगों को "विज्ञान" का लाभ मिलना चाहिए। पूरी दुनिया भट्ठी में रखे शक्करकंद की तरह भुन रही है! फॉरेन वाले भी भुन रहे हैं और यहाँ वाले भी भुन रहे हैं। अरे, अब तो शक्करकंद जलने भी लगे हैं

भावना करें जगत् कल्याण की!

प्रश्नकर्ता : हमारी जो जगत् कल्याण की भावना है उसमें कितना पुण्य खर्च होता है? या फिर अगर जीवन में सिर्फ वही भावना हो तो?

दादाश्री : हाँ, तो उस भावना का फल तुम्हें बहुत बड़ा मिलेगा। हमें यही देखना है कि इस भावना का क्या फल मिलेगा? **तीर्थंकरों ने क्या किया, "सिर्फ जगत् कल्याण की ही भावना की!" उसका फल क्या मिला कि वे तीर्थंकर बने। जहाँ चरण पड़े वहाँ तीर्थ कहलाता है।** उसी प्रकार मैं भी यही भावना करता हूँ। आपकी भी वही भावना है इसलिए फलीभूत होगी।

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी में लिखा है कि यह भावना होगी तो आपको बिना माँगे ही सबकुछ मिलता रहेगा।

दादाश्री : हाँ, हम एक यही भावना करें न, तो हमारा अच्छा ही होगा। और साथ ही अगले जन्म में अपना जो होना होगा उसमें कोई हाथ नहीं डालेगा। दखलंदाज़ी नहीं होगी। जो इतना समझ गया उसका कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : इस काल में तीर्थंकर बनने के लिए कौन से गुणों की आवश्यकता है?

दादाश्री : निरंतर जगत् कल्याण की भावना। अन्य कोई भावना ही न हो। जो भी खाने को मिले, सोने को जो भी मिले, ज़मीन पर सोना पड़े फिर भी निरंतर एक ही भावना रहती है कि, क्या करें कि जगत् का कल्याण हो! अब ऐसी भावना किसे होती है, जिसका खुद का कल्याण हो चुका हो उसे यह भावना होती है। जिसका खुद का ही कल्याण नहीं हुआ है वह जगत् का कल्याण कैसे करेगा, भावना करे तो हो। जिसे केवल जगत् कल्याण करने की ही भावना रहती हो और संसार का अन्य कोई मोह न रहा हो, सबकुछ "ड्रामेटिक" करता हो तो वह "तीर्थंकर गोत्र" बाँधता हैं! तीर्थंकरों को पिछले जन्म में ज्ञान होने के बाद ऐसा अंतिम भाव होता है, वह है जगत् कल्याण का। खुद का कल्याण हो चुका है अब औरों का कल्याण किस तरह से हो ऐसे भाव होते हैं। इस भाव के फल स्वरूप वैसा ही भावात्मा बन जाता है। सब से पहले भावात्मा तीर्थंकर बनता है। उसके बाद द्रव्यात्मा तीर्थंकर बनता है। वह भी निर्विकल्प का फल नहीं है, विकल्प का फल है, भाव का फल है।

अक्तूबर २०१७
वर्ष : ५, अंक : ०६
अखंड क्रमांक : ५४

अक्रम यूथ

१ से ८ नवम्बर २०१७

हर दिन शाम ५ से १०

प्रवेश बिना मूल्य

परम पूज्य दादा भगवानનો ૧૧૦મો જન્મજયંતી મહોત્સવ

૧ થી ૮ નવે.૨૦૧૭

ग्रीनलेन्ड चोकड़ी, मोरबी रोड़, राजकोट

૯૪૨૬૨ ૬૭૩૬૫

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-38014